महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१०/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपना मूलस्वरूप... सभी अपने मूलस्वरूप का अनुभव करें.. कुछ सेकंड के लिए सभी अपनी लाइट को देखें... सभी गहराई से अपने लाइट को फील करने की कोशिश करें...

इस संगमयुग में सभी आत्माओं को अपने कल्याण और परिवर्तन की दिशा में, हर रोज विचार चलाने चाहिए। रोज एक नया दिन आपको मिलता है। सभी आत्माएं चेक करें — आज के इस नए दिन में आपने आपके कल्याण अर्थ और पुरुषार्थ अर्थ, जिससे आपका आत्म-परिवर्तन होगा, उसके लिए क्या-क्या सोचा है और सोचकर आपने उस दिशा में कुछ अभ्यास शुरू किया है?

सभी आत्माएं ध्यान में रखना, समय लिमिटेड है और आत्मा की पढ़ाई बहुत बाकी है। इस कम समय में आत्मा को अपना संपूर्ण परिवर्तन करना होगा। यही वह समय है जिसमें आत्मा दुनिया में मायावी सारे मनोरंजन को त्याग कर, अपने आत्मा के कल्याण और आत्मा के उन्नति अर्थ, आत्मा का पुरुषार्थ करने में लगनी चाहिए। क्योंकि संगमयुग का यह एक ही जनम, बहुमूल्य जनम है। इस ही जनम को आपको संपूर्ण रूप से सफल करना होगा। आपको आपका कल्याण और परिवर्तन साधना होगा।

इस ही संगमयुग में आप आत्मा को आपके मन-बुद्धि-संस्कार, सभी स्थूल कर्मेंद्रियां, सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण — सभी के ऊपर आप आत्मा को कंट्रोल पानी होगी। आपके मन-बुद्धि-संस्कार, सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, सभी स्थूल कर्मेंद्रियां आप आत्मा के ऑर्डर में चलने चाहिए। यही वह स्वराज्य अधिकारी की स्टेज है, जो सिर्फ आप संगमयुग में आत्मा का अभ्यास करके, अपने मूलस्वरूप

स्थिति में आके अपने सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियां, सभी गुण-शक्तियों के ऊपर आप कंट्रोल पा सकते हो। एक बार अगर यह संगमयुग पूरा हुआ और अगर आप आत्मा ने आपकी स्वराज्य अधिकारी की स्टेज को प्राप्त नहीं कर पाए, तो आप आत्मा की जितनी स्थिति बनी, जितना-जितना आपके मन-बुद्धि-संस्कार, सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण और स्थूल कर्मेंद्रियों के ऊपर आप जितना कंट्रोल कर पाए, उतना ही उसी के हिसाब से आपकी, आपके स्वराज्य अधिकारी की स्टेज होगी। एक बार संगम पूरा हुआ, उसके बाद आपको किसी भी प्रकार से स्थिति बनाने का मौका नहीं मिलेगा। फिर जितना जिसने यहां पर अपने मन पर विजय प्राप्त की, मन को ऑर्डर देके जो आत्मा अपने मन को चलाना सीख लिया, सतयुग-त्रेता में आत्मा के ऑर्डर से ही मन चलेगा और साथ ही साथ, त्रेता के बाद द्वापर और कलयुग में, आपने संगम में आपकी जितनी स्वराज्य अधिकारी की स्टेज को उपलब्ध हुए थे, उस अनुसार आपका मन आपको विचार देगा। उस ही प्रकार से आपकी बुद्धि चलेगी, आपके संस्कार चलेंगे। अगर इस संगम में आपने इन पर विजय प्राप्त नहीं की, आपने इनको चलाना नहीं सीखा, तो अगले युगों में आपको वह चलाएंगे। द्वापर और कलयुग में आपको वो सब चलाएंगे। फिर आपको विचार आएगा कि आपका मन इतना क्यों चल रहा है? आपकी बुद्धि यहां-वहां क्यों भाग रही है? आपके संस्कार ऐसे कैसे इमर्ज हो रहे हैं? जो हम नहीं चाहते, वो सब क्यों यहां हो रहा है? क्योंकि संगमयुग में जब आपके पास समय था अपने सभी गुण-शक्तियां, सभी सूक्ष्म कर्मेंद्रियां, सभी स्थूल कर्मेंद्रियां इनके ऊपर ऑर्डर चला के इनके स्वराज्य अधिकारीपन की स्थिति को प्राप्त करना, जो कि आपने नहीं किया। आपने संगमयुग में भी अपने भाव-भावनाओं में आके, आत्मा की मुख्य पढ़ाई ही नहीं की।

संगमयुग है ही आत्मा के पढ़ाई का युग। संगमयुग में आत्मा का अपने रचयिता — उस यूनिवर्स के शिवबाबा के साथ मिलन का समय होता है। उस यूनिवर्स के शिवबाबा सभी आत्माओं को संगम में मिलते हैं। उन सभी को ज्ञान से मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षाओं से अपना परिवर्तन करना सिखाते हैं। पर संगमयुग में ही आत्माएं अगर अपने पढ़ाई को चूके और मायावी संसार में ही अपना मायावी आनंद लेने में

व्यस्त रहे, तो आपका जो भी अगले कल्प का ड्रामा रचेगा, वह अंत में आपको बुरा लगेगा। फिर अंत में आप कहोगे कि "हमने तो संगम का समय बर्बाद किया, जो कि हमारे पास बहुत समय था, पर हमने हमारे ऊपर ध्यान ना देते हुए हम बाहरी बातों में ही रहे।"

संगमयुग में जब-जब आत्माओं के रचयिता शिवबाबा आते हैं, तो आत्माओं का सबसे पहले एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि आत्मा का कल्याण और परिवर्तन की पढ़ाई शिवबाबा से सीखकर, अगले कल्प के लिए अपने आप को तैयार करना, ना कि शिवबाबा मिलने के बाद भाव-भावनाओं में आना कि "हमें तो मिल गया जो चाहिए था।" आपका रचयिता शिवबाबा भी भाव-भावना को वैल्यू नहीं देते। आप पढ़ाई के युग में हो और टीचर आपको पढ़ाई सिखा रहे हैं। उसमें आप बीच में ही आपके मायावी भाव और भावनाओं को आकर, आप आपका नुकसान कर रहे हो और आप आपके रास्ते से भटक रहे हो, जो कि आपको आत्म-कल्याण की, आत्म-परिवर्तन की पढ़ाई करनी चाहिए, ना कि शिवबाबा का जप जपना चाहिए।

संगमयुग में सभी आत्माओं को सबसे पहले अपने आत्मिक स्थिति में आने का अभ्यास करना चाहिए। आत्मा-आत्मा व्यवहार करना चाहिए। हर कर्म आत्मिक व्यवहार में ही करने चाहिए। यह सब है पढ़ाई। ब्रह्मा बाप ने भी स्वयं की आत्मा की दिन-रात पढ़ाई की। ऑटो में कुछ नहीं होता, सब कुछ करना पड़ता है, मेहनत करनी पड़ती है। बिना पढ़ाई के, बिना अभ्यास के आपके अंदर कभी भी परिवर्तन नहीं हो सकता।

इस संगमयुग में अनंत यूनिवर्स के रचयिता — परमात्मा आए हैं; तो सभी आत्माओं को अपने परिवर्तन के लिए, परमात्मा की हर शिक्षा पर चलना होगा। संगमयुग, सारा युग ही पढ़ाई का युग है, परिवर्तन का युग है। इस युग में आप जितना स्वयं को परिवर्तन कर पाओगे, उतना ही आप अगले कल्प में आपका उस प्रकार का ड्रामा का पार्ट निर्धारित करोगे। इसलिए संगमयुग में आत्म-कल्याण की, आत्म-परिवर्तन की पढ़ाई करके, यहां परमात्मा के पास पहुंचकर अपने आत्मा के कल्याण और परिवर्तन अर्थ,

परमात्मा की शिक्षाओं पर चलकर, परमात्मा की श्रीमत पर चलकर कोई भी आत्मा अष्ट रतन में, १०८ में आ सकती है। नंबर फिक्स नहीं है इस संगमयुग में। नंबर अभी बनेंगे। हर किसी के अपने आत्मा के पढ़ाई के ऊपर है और हर किसी ने अपना परिवर्तन कितना किया है, उसके ऊपर है।

इस संगमयुग में यह नहीं देखा जाएगा कि आपने कितनी मनसा, वाचा, कर्मणा सेवाएं की। क्योंकि सेवा यह सब्जेक्ट परमात्मा का है। परमात्मा की शक्तियां ही सेवाएं करती हैं। करन-करावनहार एक ही परमात्मा है। सभी आत्माओं को यह अवश्य ध्यान में रखना, कोई भी इस भ्रम में नहीं रहना कि आपने तन, मन, धन, मनसा, वाचा, कर्मणा ढेर सारी सेवाएं की हैं, माना आपका अगले कल्प का पार्ट, बेस्ट पार्ट ही नूंद होगा — यह भ्रम है। सेवा से नंबर कभी नहीं आता। परमात्मा का लिस्ट में अपना-अपना रिकॉर्ड बनाने का, नंबर लाने का आधार अलग है।

उसमें सबसे पहले आती है — परमात्मा की हर आज्ञा के लिए, हर शिक्षा के लिए, हर श्रीमत के लिए आप आत्मा की दिल सच्ची है क्या? इस संगमयुग में सारे अष्ट रतन, १०८ और आगे के सारे, सभी का नंबर सच्ची दिल परमात्मा के प्रति, ईश्वरीय परिवार के प्रति, ड्रामा के प्रति, आपके स्वयं के पार्ट के प्रति और स्वयं के प्रति, क्या है आपकी सच्ची दिल — यह है पहला सब्जेक्ट।

दूसरा है निश्चय बुद्धि। आपका परमात्मा के ऊपर कितना निश्चय है? आपका ड्रामा के ऊपर कितना निश्चय है? आपका आपके ऊपर कितना निश्चय है? यह हुआ दूसरा सब्जेक्ट।

तीसरा है समर्पण। आप परमात्मा के लिए आपका स्वयं का समर्पण कितना है? आपने क्या आपका, आप आत्मा का संपूर्ण अस्तित्व परमात्मा को समर्पण किया है? आप कितने समर्पण बुद्धि हो? क्या सच में आपका समर्पण परमात्मा के प्रति दिल का है या किसी भी प्रकार से स्वार्थ भाव का है कि आपको परमात्मा से कुछ रिटर्न चाहिए? समर्पण — यह है तीसरा सब्जेक्ट।

और चौथा है श्रीमत। परमात्मा की हर श्रीमत पर आप कितना दिल से चलते हो, कितनी श्रीमत पालन करते हो — यह नहीं देखा जाएगा, पर कितनी श्रीमत दिल से पालन करते हो — यह देखा जाएगा।

यह चार सब्जेक्ट हैं इस संगमयुग में — अष्ट रतन, १०८ और आगे के नंबर लेने के। जो भी अष्ट रतन होंगे, उनके यह चारों ही सब्जेक्ट ऑल ओके होंगे। वो भी, उसमें भी थोड़ा-बहुत नंबर आगे-पीछे होगा। इसलिए तो एक से लेके आठ, अष्ट रतन हैं। उस ही प्रकार से १०८ में भी इन चार सब्जेक्ट के ऊपर, १०८ बनेंगे।

इसलिए अब तक जिस प्रकार से आत्माओं की रियल पढ़ाई शुरू होनी चाहिए थी, वह अब तक नहीं हुई है। अभी समय बहुत कम है और इस कम समय में सभी आत्माओं को इन चारों ही सब्जेक्ट की पढ़ाई को पढ़ना होगा। हर एक सब्जेक्ट के मार्क्स अपने-अपने हैं और यह कोई किसी की कॉपी नहीं कर सकता। हर किसी को अपने ऊपर काम करना है। हर किसी को अपनी कमाई जमा करनी है।

अब तक मायावी संसार में बहुत संसार किया। अभी जागृत हो जाओ। अपने समय को व्यर्थ नहीं गवाना, नहीं तो अंत में आपका ही रिजल्ट आपके हाथ में होगा। फिर बहुत पछताओगे — "क्यों नहीं हम श्रीमत पर एक्यूरेट चल पाए? क्यों नहीं हमारे अंदर समर्पण का संपूर्ण भाव जागृत हुआ? क्यों नहीं हमारी दिल संपूर्ण रूप से सच्ची नहीं बनी? क्यों दिल में कुछ खोट रही?" यह सारे सवाल अंत में रिजल्ट हाथ में आने के बाद, फिर यह सब बातें नहीं सोचना। इसलिए जो करना है, वो अभ ही कर लो। समय कम है, मंजिल बहुत बड़ी है और यह सारे सब्जेक्ट में इसलिए पढ़ाई नहीं करना कि कोई अष्ट रतन या १०८ या रॉयल फैमिली में आना है। नहीं, यह भी एक स्वार्थ भाव हुआ। यह सारे सब्जेक्ट, आत्मा के कल्याण और आत्मा के परिवर्तन के लिए हैं। भल पद जो भी मिले, पर हर आत्मा का यही अपना संकल्प होना चाहिए कि "मुझे मेरी आत्मा का संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन करना ही है, और वह भी परमात्मा से करना है।"

सभी आत्माएं चेक करना — क्या अभी भी आप जागृत हो या संसार की माया में सोए हो? माया भी अलग-अलग प्रकार की है, सभी जान जाएं। कोई तो कहेंगे — "हमसे तो अभी क्या होगा? हमारे शरीर की उमर तो इतनी है, हम क्या पढ़ाई पढ़ पाएंगे?" कोई कहेंगे — "हमें तो घर-बार संभालना है, हमारी ही जिम्मेवारी है, हम कैसे पढ़ाई कर पाएंगे?" मायावी कारण तो सदा हाजिर ही रहेंगे, पर सच में जिस आत्मा को अपना कल्याण और परिवर्तन करना है, वो अपने पढ़ाई पर अवश्य ध्यान देगा और परमात्मा के पास पहुंचकर, अपना कल्याण जरूर करेगा।

इसलिए सभी आत्माएं चेक करें — क्या सच में आप आपका कल्याण और परिवर्तन चाहते हो या आप अभी जिस स्थिति में हो, वही स्थिति आपको अच्छी लगती है? हर कोई अपने से चेक करे। समय कभी भी किसी के लिए नहीं रुकता। इसलिए जो भी करना है अपने कल्याण और परिवर्तन अर्थ, वह अभी कर लो।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः